

HAPPY SCHOOL

Volume 1 - Issue 2, July 2018



A Bi-annual Magazine of
Government Model Primary School Ganga Bhogpur
Yamkeshwar - Pauri Garhwal

पत्रिका के बारे में

“हैप्पी स्कूल” राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय गंगा भोगपुर द्वारा प्रकाशित एक ऑनलाइन पत्रिका है। इस पत्रिका का उद्देश्य विद्यार्थियों व अध्यापकों में छुपी हुई लेखन प्रतिभा को उजागर कर समाज तक पहुंचाकर एक संवाद प्रक्रिया को जागृत करना है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त विचार लेखकों के अपने हैं। अतः यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक लेख में विद्यालय या सम्पादक मंडल अपने विचारों को प्रस्तुत कर रहें हों।

©2018, पत्रिका में प्रकाशित लेखों का रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। बिना किसी पूर्व लिखित अनुमति के लेखों का पुनर्मुद्रण किसी भी रूप में मान्य नहीं होगा।

सलाहकार समिति

निदेशक - प्राथमिक शिक्षा
श्री आर के कुंवर
सहायक निदेशक गढ़वाल मंडल - प्राथमिक शिक्षा
श्री एस पी खाली
जिला शिक्षा अधिकारी - प्राथमिक शिक्षा
श्री कुंवर सिंह रावत
खंड शिक्षा अधिकारी - यमकेश्वर
श्री अमित कोटियाल
उप शिक्षा अधिकारी - यमकेश्वर
श्री शैलेन्द्र अमोली
प्रधानाध्यापक - रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर
श्रीमती लक्ष्मी पोखरियाल

सम्पादकीय समिति

अकादमिक सम्पादक
डा. अतुल बमराड़ा
मुख्य सम्पादक
रेखा पुरोहित
सम्पादक
आशा बिष्ट
सह-सम्पादक
धनेश्वरी रतूड़ी
पूनम बमराड़ा



GOVERNMENT MODEL PRIMARY SCHOOL
GANGA BHOGPUR

प्रेम चन्द अग्रवाल
अध्यक्ष
उत्तराखण्ड विधान सभा



सत्यमेव जयते

विधान भवन, देहरादून

कार्यालय : 0135-2665885

फैक्स : 0135-2666788

आवास : 0135-2530907

फैक्स : 0135-2530908

संख्या :

दिनांक :

“शुभकामना संदेश”

सं. 694/अ. /मा.अ. /वि.स.

देहरादून, उत्तराखण्ड

दिनांक 6.6.2018

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालय, गंगा भोगपुर की अर्द्ध वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है, जो कि विद्यालय के सर्वांगीण विकास के लिये सराहनीय कार्य है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से विद्यालय की गतिविधियाँ शैक्षणिक, सांस्कृतिक, खेल व संस्कार पक्ष के साथ ही विद्यालय से जुड़ी समस्त क्रियाकलापों की जानकारी समाज को मिल सकेगी, जिससे विद्यालय शैक्षिक उत्कृष्टता के साथ-साथ सामाजिक चेतना का केन्द्र भी बन सकेगी।

मैं विद्यालय के संपादक मण्डल, शिक्षकगणों, छात्र/ छात्राओं, एवं विद्यालय को सहयोग प्रदान करने वाले समस्त प्रबुद्ध अभिभावकों को अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुये पत्रिका के सफल प्रकाशन की मंगल कामना करता हूँ।

(प्रेम चन्द अग्रवाल)

अध्यक्ष

विधान सभा उत्तराखण्ड

कैम्प कार्यालय: ए-3, वैराज कालोनी, ऋषिकेश, फो. 0135-2453700, E.mail: uttarakhandspeaker@gmail.com

एस.पी. खाली

पी.ई.एस.

अपर निदेशक (प्रारम्भिक शिक्षा)

गढ़वाल मण्डल, पौड़ी



उत्तराखण्ड शासन

फोन : 01368-222393

फैक्स : 01368-222394

ईमेल : adbasic2013@gmail.com

Message

"Success comes to those who work hard and stays with those, who don't rest on the laurels of the past". We live today in a world that is so very different from the one we grew up in, the one we educated in. The world today is changing at such an accelerated rate and we as educators need to pause and reflect on the entire system of Education. Are our schools well equipped to prepare our children to face the challenges that the future holds? Question such as these are factors that motivate us to go through a continuous process of reflection.

Aristotle once said that, *"Educating the mind without educating the heart is no education at all"*. Even as we impart education to match the advancement of Technology and globalization, we march our children ahead with Department of School Education's ethos of moral values and principles. We pride ourselves to help them grow and develop into sensitive and responsible citizens of the future.

We fortunately have a committed and dedicated teaching fraternity with caring and cooperative parents, which blend harmoniously to create a child-centered school at GMPS Ganga Bhogpur. It is natural to find in this ambience, the intensive use of a variety of thinking activities, strategies and group dynamics so that classrooms become alive. The very Second issue of the Magazine "Happy School" is a milestone that marks the growth of the School, unfolds the imaginations and gives life to the thoughts and aspirations. It unleashes a wide spectrum of creative skills ranging from writing to editing and even in designing the Magazine. I congratulate the entire team for their hard work and dedication that has resulted in the publication of this issue of the School Magazine.

(S. P. Khali)

Additional Director – Basic Education
Garhwal Mandal - Uttarakhand

कुंवर सिंह रावत

जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा०शि०)

जनपद-पौड़ी गढ़वाल

फोन न०-01368-222199

Email-deobasicpauri@gmail.com

शुभकामना-सन्देश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय गंगाभोगपुर, विकास खण्ड यमकेश्वर, जनपद पौड़ी गढ़वाल द्वारा विद्यालय पत्रिका "हैप्पी स्कूल" के द्वितीय अंक का प्रकाशन कर रहा है। इस अवसर पर मैं समस्त विद्यालय परिवार को शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

प्रत्येक बच्चा परिवार में, समाज में, कक्षा में, विभिन्न प्रकार की शैक्षिक गतिविधियों से जुड़ा रहता है तथा उन्हें शिक्षित करने के बहुआयामी तरीके नवाचार की ओर अग्रसर करते हैं। "हैप्पी स्कूल" पत्रिका भी इसी क्रम में किया गया एक नवाचारी प्रयोग है जो कि बच्चों को स्वनिर्मित कहानी, कविता, चुटकुले, पहेलियाँ आदि बनाने के लिये एक मंच प्रदान करता है। पत्रिका का एक भाग अध्यापक वर्ग को भी लेखन कला की ओर प्रेरित कर एक अवसर प्रदान करता है जिसके माध्यम से वह अपने विचारों को जनमानस तक प्रेषित कर सके व भविष्य में यह साहित्य प्रयोग में लाया जा सके।

विद्यालय द्वारा अल्प संसाधनों का प्रयोग कर "हैप्पी स्कूल" पत्रिका का निर्माण किया गया है, जिसे कि विभिन्न तकनीकी माध्यमों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी का उचित प्रयोग कर पत्रिका तक पाठक वर्ग की आसान पहुँच विद्यालय व सम्पादक मण्डल की दूरगामी सोच को प्रदर्शित करती है।

विद्यालय परिवार द्वारा किया जा रहा यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। आशा है आपके द्वारा किये जा रहे इस सराहनीय प्रयास का अनुसरण जनपद के अन्य विद्यालय भी कर सकेंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनायें।

सादर,

(कुंवर सिंह रावत)^{15/6/18}

प्रतिष्ठा में,

प्रधानाध्यापिका,

रा०आ०प्रा०वि० गंगाभोगपुर

विकासखण्ड यमकेश्वर

पौड़ी गढ़वाल।

सम्पादकीय

शिक्षा का अर्थ केवल वस्तुओं या विभिन्न विषयों का ज्ञान मात्र नहीं है। यदि अर्थ को यहीं तक सीमित मान लिया जाये तो वह अज्ञान से कुछ ही अधिक हो सकता है और कई बार तो उससे भी अधिक भयावह परिणाम प्रस्तुत कर सकता है। ज्ञान की अथवा शिक्षा की सार्थकता वस्तुओं के ज्ञान के साथ-साथ अनुपयोगी और उपयोगी का विश्लेषण करने तथा उनमें से अनुपयोगी को त्यागने एवं उपादेय को ग्रहण करने की दृष्टि का विकास भी होना चाहिए। तभी शिक्षा अपने सम्पूर्णता को प्राप्त होती है।

ज्ञान और आचरण में - बोध और विवेक में जो सामंजस्य प्रस्तुत कर सके उसे ही सही अर्थों में शिक्षा या विद्या कहा जा सकता है। जब यह सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता तो शिक्षा अधूरी ही कही जाएगी। आज के संदर्भ में देखें तो शिक्षा पद्धति इसी तरह की प्रवृत्तियों से पूर्ण है। छात्रों के सामने परीक्षा पास करने और डिग्री हासिल करने के अलावा कोई दूसरा लक्ष्य नहीं रहता। फलतः वह अपनी सभी प्रवृत्तियों का केन्द्र परीक्षा पास करना बना लेता है और जब यहीं एकमात्र लक्ष्य रह जाता है तो व्यक्ति के अन्य पहलुओं पर स्वाभाविक ही विशेष ध्यान नहीं जाता। या यों भी कह सकते हैं कि अन्य पक्ष गौण हो जाते हैं।

इस स्थिति में जीवन-विकास की आधारशिला, नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा की जड़ें हिल जाना स्वाभाविक है। सर्वग्राही अनैतिकता के मूल में यदि शिक्षण पद्धति का यह दोष देखा जाए तो कोई अनुचित न होगा और जब सारे समाज के लगभग सभी वर्ग नैतिक मूल्यों की अवहेलना कर अनैतिकता का वातावरण विनिर्मित कर रहे हों तो छात्रों में नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा पर दोहरी चोट पड़ती है।

इस स्थिति के लिए विद्यार्थी इतने दोषी नहीं हैं, जितनी कि शिक्षा-पद्धति। प्रचलित शिक्षण-पद्धति छात्रों के सामने कोई ध्येय, कोई आदर्श उपस्थित नहीं कर पाती या कहना चाहिए वह ध्येयहीनता के अंधकार में धकेलती है तो उस स्थिति में जो ज्ञान जीवन को सुसज्जित और सुरक्षित बनाता है वह ज्ञान कहाँ उपलब्ध हो पाता है? कहा जा चुका है कि शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्तित्व का समग्र विकास है। शिक्षा इसी उद्देश्य की ओर जरा भी उन्मुख हो तो ध्वंस की अपेक्षा सृजन की प्रेरणा ही जागेगी और ध्वंस का आयोजन करना भी पड़े तो वह सृजन की पृष्ठभूमि निर्मित करने के लिए ही अनिवार्य होगा।

इस संदर्भ को स्मृति में रखने के लिए प्रचलित शिक्षा-पद्धति में आवश्यक सुधार करना ही एकमात्र उपाय है और वह सुधार इस सिद्धांत को केन्द्रों में रखते हुए ही सम्भव है कि शिक्षा का उद्देश्य कोई सूचनाएं या जानकारीयाँ देना मात्र नहीं है, वरन् व्यक्तित्व का समग्र विकास करना है।

इस अंक में

छात्र परिशिष्ट

कविता

स्कूल हमारा	कंचन रणाकोटी	8
बोला मुर्गा	आशीष नेगी	8
काले बादल	कोमल रावत	9
मजेदार गिनती	मयंक रावत	9
गणित गणित	उज्जवल शर्मा	10
पेड़ की पुकार	वैशाली आर्य	10
दो भाई हम	आशीष नेगी	11
जीवन ज्योति जलाने दो	सोनम रणाकोटी	11
काश पेड़ भी चलते होते	सोनम रावत	12
घटाने में मजा आया	शिवांशु रणाकोटी	12
कन्या भ्रूण हत्या	सोनम	13
ओ चिड़िया	साक्षी	13
बनकर चन्द्रमा करूँ उजाला	विपुल	14
हमारे विद्यालय की कहानी	कोमल	14
गुलाब	कनक	15
मेरा देश	कनक	15

अनुभव आधारित कहानियां

मेरी टांग टूटी	अमन पोखरियाल	17
बन्दर और चिड़िया की कहानी	नंदिनी शर्मा	17
हिरन की जान बच गई	आदित्य पोखरियाल	18
नाघ से मुलाकात	कृष्णा रणाकोटी	18
गणेश जी	रोहित रावत	19
कुंजापुरी की यात्रा	आर्यन शर्मा	19
Amazing Facts	Kanchan Ranakoti	20
Minister of Body	Abhishek Negi	20
Three Things	Vivek sharma	21
Mind Opening Riddles	Raadhika	21
Save Trees	Nandini	22

अध्यापक परिशिष्ट

कवितायें व लेख

क्यों चुप रहूँ?	धनेश्वरी रतूड़ी	22
वर्तमान समय में शिक्षक की भूमिका	लक्ष्मी पोखरियाल	23
प्लास्टिक का इस्तेमाल	आशा बिष्ट	24
पर्यावरण	आशा बिष्ट	24
Discipline: Key to Success	Rekha Purohit	25
मैं और हिन्दी	पूनम बमराडा	26
हमारे वैज्ञानिक	राजीव थपलियाल	27

विद्यालय सम्बन्धी गतिविधियाँ

विद्यालय द्वारा किये गये नवाचारी प्रयोग

छात्र उपलब्धि

लेखों के लिए आमन्त्रण (जनवरी 2019 अंक हेतु)

स्कूल हमारा

कंचन रणाकोटी | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

जहां है बहती ज्ञान की धारा
वह स्कूल हमे जान से प्यारा
गंगा बहती है जिसके पास
ऐसा स्कूल है हमारा प्यारा प्यारा
ना जाति ना भाषा देखी
सबको अपना दोस्त बनाया
मिला जो भी हमे प्यार से
सबको हमने गले लगाया

बोला मुर्गा

आशीष नेगी | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

बोला मुर्गा कुकडू-कू
सुबह हुयी अब सोते क्यों
कौआ चीखा काउ-काउ
आलस का अब मत लो नाम
चिड़िया करती चीं चीं
मेरी सुनो नमस्ते

कोयल करती कू-कू
मधुर वाणी क्यों नहीं कहता तू
कबूतर कहता गुटरू गू
किसी की बुराई करता क्यों
मोर करता म्हो-म्हो
होम वर्क क्यों नहीं करता तू



काले बादल

कोमल रावत | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

काले बादल जल्दी आओ
भीगी मेघा तुम बरसाओ
अगर ना होता पानी सारा
कैसे बनता जीवन सारा



मजेदार गिनती

मयंक रावत | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

एक राजा की बेटी
दो दिन से पलंग पे लेटी
तीसरे घंटे चढ़ा बुखार
देखने आये डाक्टर चार
पांच दवा की पुडिया लाये
छठवें घंटे दवा पिलायी
सातवें घंटे होश में आयी
आठवें घंटे आँखे खोली
नोवें घंटे मुंह से बोली
दसवें घंटे दौड़ लगायी
बोलों बच्चों गिनती आयी



गणित-गणित

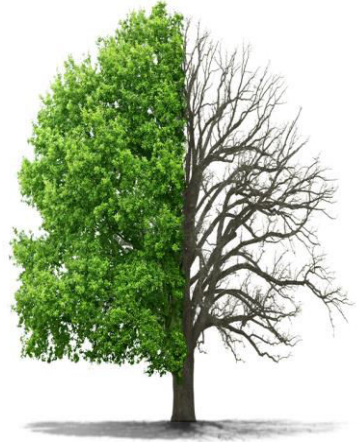
उज्जवल शर्मा | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

एक बगीचा बड़ा पुराना
गए चोर रात को
एक अकेला दो को ढूँढ़ें
तीन ना छोड़ें चार को
पांच सिपाही छः को पकड़ें
सात छुड़ाएं आठ को
जब नौ नारंगी गए चुराने
दस बंदे उस रात को

पेड़ की पुकार

वैशाली आर्य | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

मत काट, चील मुझे पछताएगा
इंसान की तरह मुझे भी दर्द होता है
मई भी रोता और हंसता हूँ
हवा के झोंके के साथ नाचता और गाता हूँ.
तुझे इतना भी मान नहीं
हवा पानी छाया पहला देता हूँ
पर्वतों को जकड़कर रखता हूँ
धरती को फटने से बचाता हूँ.
अल्प लाभ के लिए
फिर ऐसा क्यों करता तू
भावी पीढ़ी का क्या होगा
इस धरा को श्रृंगार रहित क्यों करता तू?
उठ जाग मानव – अभी भी समय है !



दो भाई हम !

आशीष नेगी | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

आयुष, आशीष दो भाई हम
स्वच्छ रखे अपना घर हरदम
सुबह पिताजी हमें उठाते
रोज गाँव की शैर कराते
मम्मी हमें रोज नहलाती
सब्जी, रोटी, खीर खिलाती
काम समय से हम निपटाएँ
हँसते-गाते पढ़ने जाएँ
लौट पिताजी जब घर आते
मौसम के ताजे फल लाते
उन्हें देखकर हम ललचाते
कहते – आयुष, आशीष बैठो
आधा तुम लो आयुष बेटा
आधा तुम लो आशीष बीटा
ऐसा झगडा कभी ना करना
आपस में मिल प्रेम से रहना



जीवन ज्योति जलाने दो

सोनम रणाकोटी | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

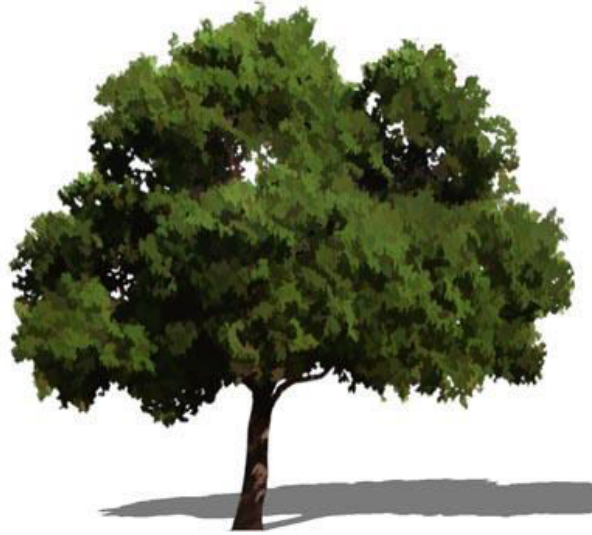
मां दुर्गा की पूजा करके
भक्त बड़े कहलाते हो
कहाँ गई वह भक्ति जो
बेटी को मार गिराते हो
लक्ष्मी को जीवन पाने दो
घर-आंगन दमकाने दो
बनद करो उनकी हत्या अब
जीवन ज्योति जलाने दो



काश पेड़ भी चलते होते !

सोनम रावत | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

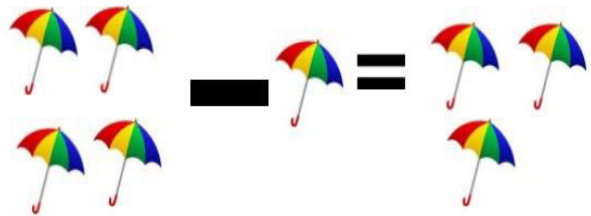
काश पेड़ भी चलते होते
 कितने मजे हमारे होते
 बाँध तने में उनके रस्सी
 चाहे जहां कहीं ले जाते
 जहां कहीं धूप सताती
 उसके नीचे हम सुस्ताते
 जहां कहीं वर्षा हो जाती
 उसके नीचे हम छिप जाते
 लगती जब भी भूख अचानक
 तोड़ मधुर फल उसके खाते
 आती कीचड़, बाढ़ कहीं तो
 झट उसके ऊपर चढ़ जाते
 काश पेड़ भी चलते होते
 कितने मजे हमारे होते



घटाने में आया मजा

शिवांशु रणाकोटी | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

पांच छोटी चिड़िया खा रही हैं अनार
 एक चिड़िया उड़ गयी बाकी रही चार
 चार छोटी चिड़िया बजा रही थी बीन
 एक चिड़िया उड़ गई बाकी बची तीन
 तीन छोटी चिड़िया खेत रही थी बो
 एक चिड़िया उड़ गई बाकी बची दो
 दो छोटी चिड़िया खा रही थी केक
 एक चिड़िया उड़ गई बाकी बची एक
 एक छोटी चिड़िया समझ रही थी हीरो
 मारी शिकारी ने गोली बाकी बची जीरो



$$4 - 1 = 3$$

कन्या भ्रूण हत्या

सोनम | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

कलियों को खिल जाने दो
मीठी खुशबू फैलाने दो
बंद करो उसकी हत्या अब
जीवन ज्योति जलाने दो

कलियाँ जो तोड़ी तुमने तो
फूल कहाँ से लाओगे
बाती की हत्या करके तुम
बहू कहाँ से लाओगे

मां धरती पर आने दो
उनको भी लहराने दो
बंद करो उनकी हत्या अब
जीवन ज्योति जलाने दो



ओ चिड़िया

साक्षी | रा.आ.प्रा.वि. सुखरौं देवी (दुगडा)

ओ चिड़िया! तुम कितनी अच्छी
फुदक-फुदक कर आती हो
दाल-दाल पर बैठकर
अपनी पूँछ हिलाती हो
उड़ मत जाना प्यारी चिड़िया
हम तुम दोनों झूलेंगे
पंख मुझे भी दे दोगी तो
आसमान को छू लेंगे.



बनकर चन्द्रमा करें उजाला

विपुल | रा.आ.प्रा.वि. सुखरौं देवी (दुगडा)

नीले आकाश में लाखों तारे
पर उनको कौन निहारे
सारी-सारी रात चमकते
पर अन्धकार मिटा ना सकते
एक अकेला चन्द्रमा आकर
अपनी किरणों को फैलाकर
सबकी आँखें ठंडी करता
सबके मनमें अमृत भरता
यह संसार भी बहुत बड़ा है
इंसानों से भरा पड़ा है
हर कोई है तन्हा यारा
बनकर चन्द्रमा करो उजियारा



हमारे विद्यालय की कहानी

कोमल | रा.आ.प्रा.वि. सुखरौं देवी (दुगडा)

सुनिए हमारे आदर्श विद्यालय की कहानी
यहाँ के सभी बच्चे जिज्ञासु, शिक्षक ज्ञानी
यहाँ दूर दूर से बच्चे पढ़ने हैं आते
यहाँ पढ़कर व खेलकर मन हैं बहलाते
सब मिल-जुलकर रहते, प्रेमभाव सिखलाते
गुरुजन भी इस संस्था के – प्रेम के साथ पढ़ाते
ऐसा है यह हमारा विद्यालय – जिसका नहीं कोई सानी
यहाँ के सभी गुरुजन हैं – बहुत गुणी और ज्ञानी

गुलाब

कनक | रा.आ.प्रा.वि. सुखरौं देवी (दुगडा)

तुम गुलाब फूलों के राजा
झूम रहे हो खुशबू लेकर
मुझे बताओ कब आओगे
मुझसे मिलने मेरे घर पर
मैं तुमसे मिलने आउंगा
जन्मदिन के मौके पर सुगंध का
तुमको एक गुलदस्ता दे आउंगा



मेरा देश

कनक | रा.आ.प्रा.वि. सुखरौं देवी (दुगडा)

जैसा मेरा देश है , न्यारा ऐसा कोई देश नहीं

फूलों का हर पल महकना
कलियों का हर रोज चटकना

बागों में बुलबुल का चहकना
मेवों का शाखों से लटकना

जैसा मेरा देश है , न्यारा ऐसा कोई देश नहीं

कैसे अच्छे-अच्छे दरिया
वो उनका इठलाकर चलना
दो बहिनें हैं गंगा-जमुना
दुनिया में नहीं सनी उनका

जैसा मेरा देश है , न्यारा ऐसा कोई देश नहीं



देखो ये सावन की बहारें
पड़ती हैं हर वक्त फव्वारें
हरे-भरे पौधों की कतारें
बादल जिनपर मोती वारें

जैसा मेरा देश है , न्यारा ऐसा कोई देश नहीं

शबनम ने फूलों को निहारा
सब ने मिलकर खूब संवारा
कैसा शमा है प्यारा-प्यारा
एक गुलशन है यह भारत सारा

जैसा मेरा देश है , न्यारा ऐसा कोई देश नहीं

मेरी टांग टूटी

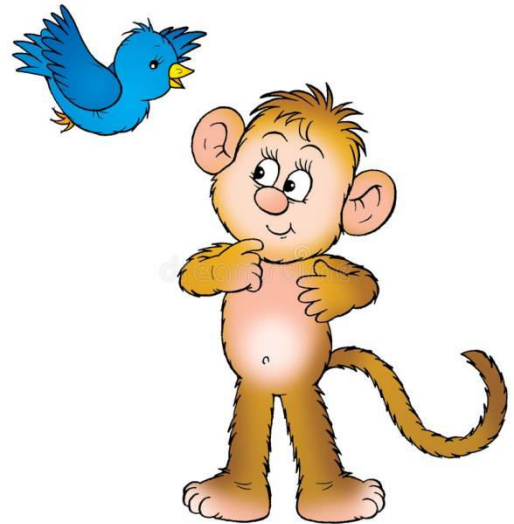
अमन पोखरियाल | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

एक दिन मैं और मेरा भाई टीवी देख रहे थे. उस समय मेरी माताजी घास लेने जंगल में गई हुई थी. माताजी को वापस आते हुए काफी वक्त लग गया. शाम के लगभग 6 बजे होंगे कि माँ वापस आ गई और मैं बहुत खुश हो गया. काफी वक्त हो जाने के कारण मेरी मां ने मेरे भाई को गाय के लिए चारा काटने के लिए कहा. कुछ देर बाद मैं भी अपने भाई के साथ चारा काटने की मशीन के पास चला गया व अपने भाई की मदद करने लगा. कुछ देर बाद अचानक मशीन का संतुलन बिगड़ने के कारण भारी भरकम मशीन मेरे पावों पर आ गिरी, व मेरे दायें पाँव की तीन उंगलियाँ कट गई. बहुत खून बहा और तभी मेरे पिताजी मुझे होस्पिटल ले गये जहां डाक्टर ने मेरी पाँव में मरहम पट्टी की. इस चोट की वजह से मैं एक साल तक ना चल सका.

बन्दर और चिड़िया की कहानी

नंदिनी शर्मा | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

एक बन्दर और एक चिड़िया साथ-साथ पेड़ पर रहते थे. बरसात से पहले चिड़िया ने पेड़ पर अपना सुंदर घोंसला बनाया. बन्दर ने उसे ऐसा करने से रोका, पर चिड़िया ने एक ना सुनी. जब वर्षा आई तो चिड़िया घोंसले में बैठी खुश हो रही थी और बन्दर दाल पर बैठे भीग रहा था और ठंड से काँप रहा था. बन्दर चिड़िया को देखकर दुखी हो रहा था. उसने सोचा कि मैंने ठीक नहीं किया. अगर चिड़िया की तरह मैंने भी घोंसला बना लिया होता तो आज यह दिन ना देखना पड़ता. उस दिन से उसने मन में निश्चय कर लिया कि वह भी अपने लिए एक घर बनाएगा और चिड़िया की तरह खुशी से उसमें अपने दिन बिताएगा.



हिरन की जान बच गयी

आदित्य पोखरियाल | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

एक बार एक शिकारी एक जंगल में गया. वहां उसने एक बहुत बड़ा पेड़ देखा, जिसके पीछे हिरन था. हिरनों का बहुत झुण्ड हुआ तो मैं बिना वह सोच ही रहा था झुण्ड पर बाघ ने हिरन के बच्चे को शिकारी को बच्चे बिना देरी किये



उसका निशाना चूक गया. बाघ बहुत जोर से गुर्राया पर शिकारी बहुत हिम्मतवाला था और उसने दूसरी गोली चला दी, जो कि बाघ के पैर में लगी. पैर में गोली लगने के कारण बाघ ने हिरन के बच्चे को वहीं छोड़ दिया और जंगल की तरफ भाग गया. वह शिकारी बच्चे को अपने घर ले आया और उसका पालन पोषण करने लगा. हिरन के इस बच्चे का नाम उसने मंगला रखा.

बाघ से मुलाकात

कृष्णा रणाकोटी | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

बात लगभग तीन साल पहले की है. मैं अपने पापा के साथ अपने ट्रैक्टर से कुछ मजदूरों के साथ गंगा भोगपुर तल्ला में अपने खेत की ओर जा रहा था. जैसे ही हम गंगाजी के किनारे पर पहुंचे, हमने देखा कि एक ओर सी बहुत सी गायें भागती हुयी हमारी तरफ आ रही हैं. जैसे ही गायों की कतार खत्म हुयी तो हमने देखा की एक कुत्ता भी उनके पीछे भागा चला आ रहा था. अचानक से अगले ही पल एक तेंदुआ



झाड़ी से निकलकर कुत्ते पर झपटा और उसे झाड़ी की ओर खींचने लगा. यह देखते ही मेरे पापा ने ट्रैक्टर को उस दिशा घुमाया और इसे देख तेंदुआ सकपका गया और कुत्ते को छोड़ दिया. कुत्ते के पास पहुंचकर हमने देखा कि कुत्ते के पाँव में गहरी चोटें आयी थी. उसके बाद हम कुत्ते को अपने घर पर ले आये जिससे कि उसकी चोटों का इलाज किया जा सके. कुछ दिन घर पर उसकी देखभाल करने के बाद हमने उसे फिर आजाद छोड़ दिया. इस प्रकार कुत्ते की जान बच गयी और मुझे तेंदुए को करीब से देखने का अवसर मिला. सारी घटना काफी रोमांचित करने वाली थी.

गणेश जी !

रोहित रावत | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

गणेश जी का वाहन मूसक है और वह कई मोदक खा सकते हैं. उन्हें मोदक बहुत पसंद हैं. एक बार की बात है कि गणेश जी को बहुत भूख लगी थी. उनकी माताजी ने बहुत स्वादिष्ट मोदक बनाए थे. यह देख गणेश जी ने सोचा कि आज तो मैं इन्हें खाऊंगा. पर इस से पहले मां की आज्ञा लेनी होगी. गणेश जी अपनी माता के पास गए और कहा कि मां मुझे लड्डू खाने हैं. यह सुनते ही मां ने गणेश जी से कहा कि जाओ वो लड्डू मैंने तुम्हारे लिए ही बनाए हैं – जाओ और खा लो. जैसे ही गणेश जी मोदकों की ओर बढ़े, मूसक ने कहा कि “महाराज ! मैं भी आपके साथ चलूँगा”. गणेश जी ने मूसक को भी अपने साथ ले लिया और दोनों ने मिलकर स्वादिष्ट मोदकों का लुत्फ उठाया.



कुंजापुरी की यात्रा

आर्यन शर्मा | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

गर्मियों की छुट्टियों में मैं अपने परिवार के साथ कुंजापुरी मंदिर गया था. मेरे साथ मम्मी, पापा, चाचा, चाची, व उनके बच्चे भी थे. यह प्रशिद्ध मंदिर टिहरी गढ़वाल जिले में स्थित है. रास्ते में मैंने देखा कि वहां रोड



बनाने का काम चल रहा था जिसके लिये बहुत बड़ी-बड़ी मशीनें मंगवायी गयी थी जो कि चट्टानों को काटकर पल भर में ही समतल कर पा रही थी. मंदिर के दर्शन करने के लिए हमें कुछ पैदल दूरी भी तय करनी पड़ी पर इसमें भी बहुत मजा आया. मंदिर में पूजा करने के बाद हमने फोटो खींची व मैंने मोबाइल से वीडियो भी बनाया. कुंजापुरी माता के दर्शन कर मुझे बहुत अच्छा लगा. मेरे पापा ने मुझसे कहा कि अगली छुट्टियों में वो हमें टिहरी जिले में स्थित माँ चन्द्रबदनी के दर्शन करवाएंगे.

AMAZING FACTS

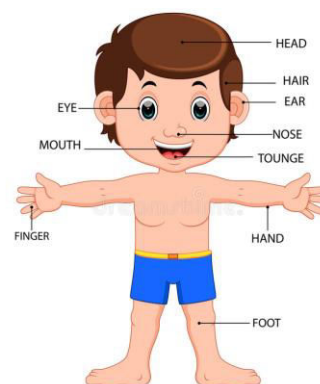
Kanchan Ranakoti | GMPS Ganga Bhogpur (Yamkeshwar)

- We forget 80 percent of what we learn every day.
- Flemings have knees that can bend backward.
- Polar bears look white, but they actually have a black skin.
- Mosquitoes have up to 47 teeth.
- It is impossible for pigs to look at the Sky.
- Butterfly taste with legs.

MINISTER OF BODY

Abhishek Negi | GMPS Ganga Bhogpur (Yamkeshwar)

Brain	The Prime Minister
Ears	The Post and Telegraph Minister
Hands	The Industry Minister
Legs	The Transport Minister
Skin	The Defense Minister
Mouth	The Broadcasting Minister
Stomach	The Food Minister



THREE THINGS

Vivek Sharma | GMPS Ganga Bhogpur (Yamkeshwar)

Three things to remember
Mother, Father and God;
Three things to watch
Thought, word and pup;
Three things to mention
Promise, friendship and affection;
Three things to love
Honesty, purity and humanity;
Three things to control
Tongue, pride and temper;
Three things to avoid
Drinking, smoking and gambling;
If we follow all the above things
We will become complete human beings.

Mind Opening Riddles!

Raadhika | GMPS Ganga Bhogpur (Yamkeshwar)

1. Name the smallest 'Moon'
2. Which is the highest 'Age'
3. Which 'Air' we can breathe
4. Which 'Dress' we can't wear
5. Which 'Lock' makes us punctual

JaMoon, PercentAge, ChAir, AdDress, CLock

SAVE TREES!

Nandini | GMPS Ganga Bhogpur (Yamkeshwar)

The trees are very useful to us. We can't live without the trees. It gives us many things like wood, medicines, food, paper etc. it gives us pure air to clean environment. It checks the soil erosion. It gives us rubber, gum etc. So, stop cutting the trees. If we want clean environment – save trees and plant more trees, because the tree is our life.

क्यूँ चुप रहूँ?

धनेश्वरी रतूड़ी | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर (यमकेश्वर)

क्यूँ चुप रहूँ मैं, इस असहज से वातावरण में
जी रहा था स्वच्छंद, इस प्यारे से जंगल में
खा रहा था अपने हिस्से की मुट्ठी भर वनस्पति
पर गंवारा नहीं इस आदम को मेरी ज़रा सी खुशी

क्या बिगाड़ा था इसका मैंने, जो चंद सिक्कों के लालच में
कर दिया मेरे साथियों को मौन, बेच डाला उनके शवों को
फिर हंसकर कहता है – इसका जिम्मेदार कौन?

तो

क्यूँ चुप रहूँ मैं, इस असहज से वातावरण में
जी रहा था स्वच्छंद, इस प्यारे से जंगल में
पर

अब मई चुप नहीं रहूँगा, दर्द अपनों के शवों का
अब और नहीं सहूँगा

मेरी रक्षा का दायित्व समझो ए आदम,
जंगल का प्राणी हूँ, रहने दो वहां सहजता से
वरना.....

परिणाम तुम्हे ही भुगतना होगा
मेरे जीवन का मूल्य तुम्हे ही समझना होगा



वर्तमान समय में शिक्षक की भूमिका

लक्ष्मी पोखरियाल | प्रधानाध्यापिका – रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर

समाज में शिक्षक की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। छात्रों के भविष्य को सुंदर और सुदृढ़ बनाने की सारी जिम्मेदारी शिक्षक की ही होती है। जो छात्रों के सम्पूर्ण जीवन का सर्वांगीण विकास करे वही एक कुशल शिक्षक होता है। कहा भी जाता है कि शिक्षक द्वारा दिए गये ज्ञान को ही छात्र अधिक महत्व देते हैं।

शिक्षक की भूमिका को कबीर तथा तुलसीदास ने भी सराहा है। गुरु ज्ञान के द्वार होते हैं। वे ही अपने शिष्यों को सही शिक्षा देकर समाज और राष्ट्र के हितार्थ कुशल नागरिकों को तैयार करते हैं। ऐसे ही नैतिक मूल्यों के उत्थान में शिक्षकों की भूमिका सबसे कारगर और प्रभावी मानी जाती है। शिक्षक अपने उत्तम आदर्शों के द्वारा छात्रों के जीवन में ईमानदारी, सदाचार, चरित्र निर्माण, तथा कर्तव्यनिष्ठा का बीजारोपण करते हैं।

मां बच्चे की उंगलियाँ पकड़कर चलना सिखाती है। लेकिन शिक्षक प्रारम्भिक अवस्था से ही बच्चे की उंगलियाँ पकड़कर उसके सम्पूर्ण जीवन की दिशा दिखा देता है। बिना शिक्षक के ज्ञान की अवधारणा ही व्यर्थ है। छोटे-छोटे बच्चों को झूठ ना बोलने, चोरी न करने, सभ्य, एवं सुसंस्कृत नागरिक बनने की शिक्षा शिक्षक ही देते हैं।

बड़े-बड़े महापुरुषों के जीवन निर्माण में शिक्षकों की भूमिका सर्वोपरि रही है। रामकृष्ण परमहंस ने नरेन्द्रनाथ को विवेकानंद बना दिया, रत्नाकर को बात्मीकि और रामबोला को तुलसीदास। महात्मा गाँधी जी ने लिखा है कि एक आदर्श शिक्षक ही छात्रों के जीवन में सद्चरित्र निर्माण कर सकता है। आज के सन्दर्भ में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जबकि मानव मूल्यों में बहुत गिरावट आयी है। आज का युग प्रतियोगी परीक्षाओं पर आधारित होने के कारण छात्र दिग्भ्रमित हो जाता है। ऐसे समय में शिक्षक के उपर छात्र को कंचन बनाने का गुरुतर भार भी है। वर्तमान समय में शिक्षा के व्यवसायीकरण हो जाने से गिरावट आई है, जिसे सुधारने का भार भी शिक्षकों के कंधों पर ही है। आदर्श शिक्षकों के द्वारा ही भारत को पुनः विश्वगुरु बनाया जा सकता है।

प्लास्टिक का इस्तेमाल

आशा बिष्ट | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर

न करें इस्तेमाल प्लास्टिक की बोतलों का
वरना हो जाएगा विनाश पृथ्वीवासियों का
न गलते हैं न सड़ते हैं ये
बस नुकसान जमीन को पहुंचाते हैं
अजैविक कचरा कहलाता है ये
जले तो प्रदूषण फैलाता है
न करें इस्तेमाल प्लास्टिक की बोतलों का
वरना हो जाएगा विनाश पृथ्वीवासियों का



पर्यावरण

आशा बिष्ट | रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर



आओ मिलकर पेड़ लगायें
वातावरण को स्वच्छ बनाएं
जहां जहां हो हरियाली
वहां वहां पर हो खुशहाली
जैसे जैसे विकास बढ़ता है
वैसे वैसे पेड़ कटता है
पृथ्वी हमसे कहती है
प्रदूषण वह कितना सहती है
इस प्रदूषण से इसे बचाओ
थोड़े से पेड़ लगाओ
कुदरत का बनो सहारा
हो उन्नत भारत देश हमारा

DISCIPLINE: KEY TO SUCCESS

Rekha Purohit | GMPS Ganga Bhogpur

Discipline is an essential part of an individual's life. We can't imagine of success without it. In other words, we can say that discipline as a key of success. Discipline means doing work in a regular and proper way. Indiscipline has become a major problem in each and every field of life now-a-days. There is a lack of discipline in factories, offices, schools etc. The main reason behind indiscipline is School's life. School's indiscipline doesn't mean – no noise in the classroom, but realization of its moral duty. Teachers must encourage their students for discipline by performing it themselves so that students may get success and become a part of good society. Thus, we can say discipline is most important part of our life. If we want to make our children disciplined – it is very important for teachers to stay disciplined.

The teachers are the role model for a child. If we observe the word DISCIPLINE, it keeps 100 marks.

D	I	S	C	I	P	L	I	N	E	SUM
4	9	19	3	9	16	12	9	14	5	100

So, we can say that Discipline gives us 100% marks.

मैं और हिन्दी

पूनम बमराड़ा | रा.आ.प्रा.वि. पोखरीखेत

हिन्दी और मेरा नाता एक माँ व पुत्री के समान है। जैसे माँ अपने बच्चे के संकेत मात्र से ही समझ जाती है कि बच्चे को क्या तकलीफ है, उसी तरह हिन्दी भाषा में जो अपनापन है वह विदेशी भाषाओं यथा – अंग्रेजी, जापानी या जर्मनी आदि भाषाओं में नहीं है। भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने कहा है कि-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल; बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल

हिन्दी मुझे अपने अस्तित्व से परिचय करवाती है। वर्तमान परिपेक्ष में सिर्फ भारतीय ही नहीं बल्कि समस्त वैश्विक समाज अंग्रेजी भाषा की तरफ अग्रसर है। हमारा दुर्भाग्य है कि हम जहाँ एक ओर पश्चिमी सभ्यता की ओर रुख कर रहे हैं, वहीं विभिन्न पश्चिमी देशों के लोग हिन्दी भाषी सभ्यता को अपनाकर अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। भारत की आध्यात्मिक राजधानी ऋषिकेश व हरिद्वार में इसके अनेकों उदाहरण हैं जहाँ पर कि लोग विदेशों से आकर हिन्दी सभ्यता व योग का अध्ययन कर इसका प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

मुझे यह जान पड़ता है कि हिन्दी ही एक मात्र ऐसी भाषा है, जिसमें कि मैं अपनी भावनाएं प्रकट करने में सहजता महसूस करती हूँ और मुझे किसी भी प्रकार कि हिचकिचाहट महसूस नहीं होती। हिन्दी अभिव्यक्ति में मुझे जो गर्व व सरलता महसूस होती है, वह किसी अन्य भाषा में नहीं होती। अक्सर मुझे यह देखने को मिलता है कि अंग्रेजी में वार्तालाप करते-करते लोग हिन्दी के शब्दों का प्रयोग करने लगते हैं, जिससे यह प्रतीत होता है कि हिन्दी अपने आप में एक सम्पूर्ण भाषा है और इसके बिना अभिव्यक्ति लगभग असंभव है। मुझे विदेशी भाषाओं के सरल से लेकर विलाष्ट शब्दों तक सीखने हेतु पुस्तकों व अध्यापकों का सहारा लेना पड़ा जबकि हिन्दी भाषा में लिखी पुस्तकों, लेखों आदि को पढ़ने में लगता है कि अधिकाँश शब्द या तो सुने या प्रयोग किये हुए हैं। जहाँ हिन्दी भाषा के एक ५०० शब्दों के लेख पढ़ने व समझने में डेढ़ से दो घंटे लग जाते हैं व साथ ही अंग्रेजी शब्दकोश का यदा-कदा प्रयोग करना पड़ता है, वहीं दूसरी ओर हिन्दी भाषा में लिखे हुए उसी लेख को पढ़ने व समझने में मात्र १५ से २० मिनट ही लगते हैं। अर्थात् हिन्दी भाषा मात्र सरल ही नहीं बल्कि हमारी कार्यकुशलता को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। हिन्दी ही एक मात्र ऐसी भाषा है जिसमें कि अपने से बड़ों के लिए आदर व सम्मान प्रस्तुत करने हेतु उचित शब्द भंडार उपलब्ध है।

हमारे वैज्ञानिक

राजीव थपलियाल – रा.आ.प्रा.वि. सुखरौं देवी (दुगंडा)

डा. ए पी जे अब्दुल कलाम

प्रयोगशालाओं से नाता तोड़कर रायसीना हिल्स स्थित राष्ट्रपति भवन पहुंचे भारत के पूर्व राष्ट्रपति और मिसाइल विशेषज्ञ के रूप में ख्याति प्राप्त डा. कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु में रामेश्वरम में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था. तिरुचिरापल्ली के सेंट जोसेफ कॉलेज से स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात उन्होंने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी से एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में डिग्री ली. वर्ष 1958 में वे डी आर डी ओ यानि कि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन से जुड़ गए. 1962 से 1982 के बीच उन्होंने इसरो यानि भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में विभिन्न पदों पर रहते हुए अनेक प्रक्षेपास्त्र प्रणालियों पर काम किया. वे 1982 में डी आर डी ओ के निदेशक बने. उनके दिशा निर्देशन व मार्गदर्शन में भारत ने जमीन से जमीन पर मार करने वाली अग्नि मिसाइल का सफल परीक्षण किया और इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में अन्य विकसित देशों की कतार में खड़ा हो गया. उन्होंने इसके अलावा अर्जुन टैंक और हलके लड़ाकू विमान तैयार करने की परियोजनाओं को भी निर्देशित किया. 25 जुलाई 2002 को राष्ट्रपति भवन तक पहुंचे डा. ए पी जे अब्दुल कलाम ने कई पुस्तकें भी लिखी जिसमें ज्वलंत मष्तिष्क व अग्नि की उड़ान काफी प्रचलित व लोकप्रिय हैं. डा. अब्दुल कलाम 1997 में भारत रत्न, 1990 में पद्म विभूषण व 1981 में पद्म भूषण से सम्मानित किये जा चुके हैं.



डा. कल्पना चावला

आकाश गंगा की अमर सैलानी हरियाणा के करनाल शहर में सितारों की चादर में सोने वाली पंजाब इंजीनियरिंग कालेज से अध्ययन कर चुकी कल्पना चावला नासा की उच्च कोटि की वैज्ञानिक थी. भारतीय वसुंधरा के जनमानस को उन पर सदा ही गर्व रहेगा. गुरुत्वाकर्षण शून्य अंतरिक्ष में एक बार यात्रा करते हुए कल्पना चावला ने कहा था कि आपकी बौद्धिक दक्षता ही आपका अस्तित्व है. फ्लोरिडा स्थित केनेडी स्पेस सेंटर के स्वच्छ आकाश में 01 फरवरी 2003 को सांय लगभग 7 बजे ध्वनि की रफ़्तार से 18 गुना तेज गति से धरती की ओर आते वक्त पच्चीस लाख पुर्जों वाली उस चमत्कारी मशीन, जिसके पुर्जे जादुई कौशल के साथ एक दुसरे से जुड़े थे, के टूटते ही डा. कल्पना चावला को नियति की क्रूरता का एहसास हो गया था. वे धरती के 252 चक्कर के बराबर 104 करोड़ किलोमीटर की यात्रा करने वाली दोस्तरी भारतीय बनी. आकाशगंगा की निवासी बनना कल्पना चावला अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानती थी.





थानो जैव उद्यान का भ्रमण



वार्षिकोत्सव के अवसर पर योग प्रस्तुतीकरण



वार्षिकोत्सव 2018



दंत स्वच्छता अभियान



माँ बेटी मेला के अवसर पर सामुदायिक प्रस्तुतीकरण



अम्बानी अंतर्राष्ट्रीय विद्यालय द्वारा विद्यालय प्रांगण में गतिविधियाँ



बच्चों के साथ इंडिया गेट भ्रमण



दिल्ली स्थित डब्लू डब्लू एफ भारत द्वारा प्रायोजित एक पृथ्वी कार्यक्रम में प्रतिभाग



वन महोत्सव सप्ताह के उपलक्ष में वृक्षारोपण कार्यक्रम



वार्षिकोत्सव के अवसर पर थिरकते छात्र



मन की बात कार्यक्रम का सजीव प्रसारण



तराई आर्क कार्यक्रम के अवसर पर रक्षा मंत्रालय के अधिकारियों द्वारा पर्यावरण परियोजना का अवलोकन



स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम पर प्रस्तुति देते उज्ज्वल व श्रेया



होली मिलन कार्यक्रम



वन महोत्सव सप्ताह के अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम



कक्षा-शिक्षण में ICT का प्रयोग



श्री देव सुमन दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम



रा.आ.प्रा.वि. पोखरीखेत में वार्षिकोत्सव कार्यक्रम पर उपस्थित जिला शिक्षा अधिकारी
(प्रारम्भिक शिक्षा) – पौड़ी गढ़वाल

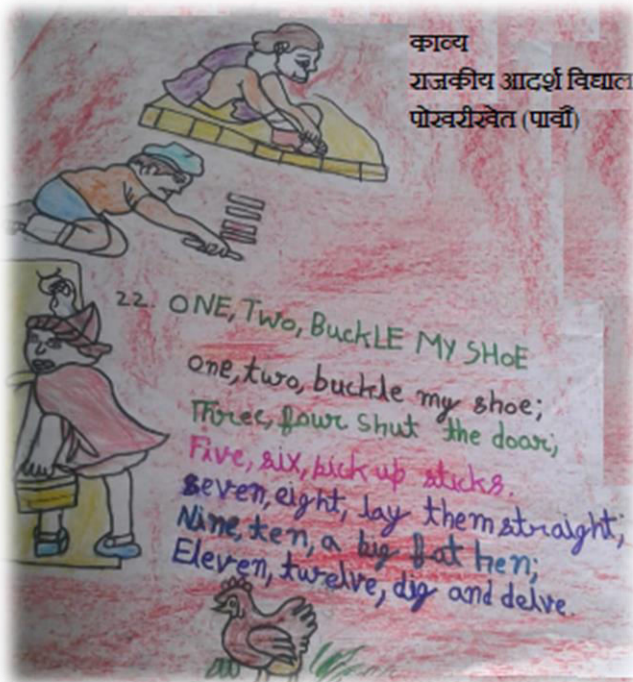


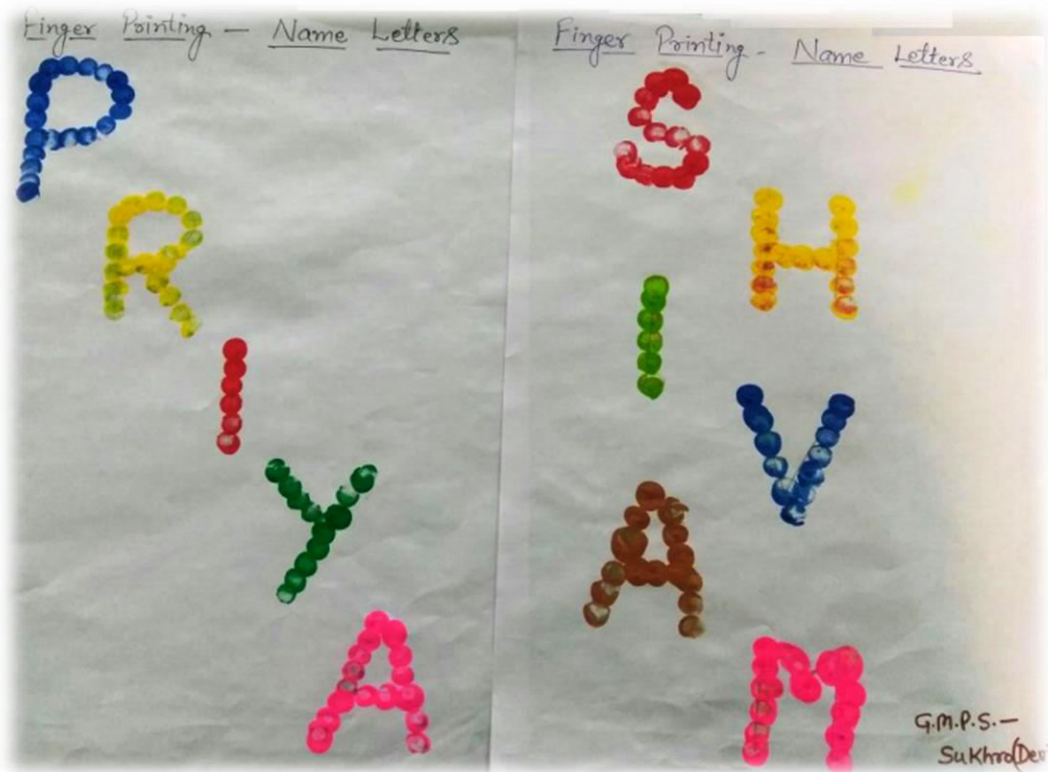
रा आ प्रा वि पोखरीखेत में विज्ञान मॉडल प्रस्तुतीकरण



रा आ प्रा वि पोखरीखेत में वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में प्रस्तुति देते छात्र-छात्राएं











School's Innovative Practices

विद्यालय में किये गये नवाचारी प्रयोग



Figure 3 Scan to Visit our YouTube Channel
<https://goo.gl/3rFqE4>



Figure 5 Scan to visit our School Website
<https://goo.gl/121YpC>

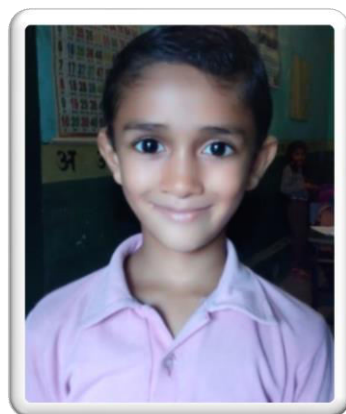


**TANUJA
SHARMA**

SCORE: 98.8 %

**UJJWAL
SHARMA**

SCORE: 98.2 %



**SONAM
RAWAT**

SCORE: 97.6 %





**KANCHAN
RANAKOTI**

SCORE: 89.46 %



**RISHABH
KANDWAL**

SCORE: 91 %



लेखों के लिए आमन्त्रण (जनवरी 2019 अंक हेतु) हैप्पी स्कूल – अर्द्धवार्षिक पत्रिका

“हैप्पी स्कूल” राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय गंगा भोगपुर द्वारा प्रकाशित एक ऑनलाइन पत्रिका है। इस पत्रिका का उद्देश्य विद्यार्थियों व अध्यापकों में छुपी हुई लेखन प्रतिभा को उजागर कर समाज तक पहुंचाकर एक संवाद प्रक्रिया को जागृत करना है। समस्त शिक्षक वर्ग से अपेक्षा की जाती है कि आपके विद्यालय में हो रही गतिविधियों (कहानी लेखन, कविता लेखन, चित्रकला व अन्य कोई भी नवाचारी क्रिया-कलाप) को सम्पादक मंडल के साथ साझा करें, जिससे कि हम आपके विद्यालय में हो रहे नवाचारों को पाठक-वर्ग तक पहुंचा सके। पत्रिका का एक मात्र उद्देश्य विद्यार्थियों व शिक्षकों की रचनात्मकता व मौलिकता को समाज तक पहुंचाना है।

सलाहकार समिति

श्री आर के कुंवर, निदेशक – प्रारम्भिक शिक्षा, उत्तराखंड
श्री एस पी खाली, सहायक निदेशक – प्रारम्भिक शिक्षा (गढ़वाल मंडल)
श्री कुंवर सिंह रावत, जिला शिक्षा अधिकारी – प्रारम्भिक शिक्षा
श्री अमित कोटियाल, खंड शिक्षा अधिकारी – यमकेश्वर
श्री शैलेन्द्र अमोली, उप शिक्षा अधिकारी – यमकेश्वर
डॉ ऐ के नौटियाल, आचार्य, शिक्षा विभाग – हे न ब केन्द्रीय विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल
श्री प्रदीप अन्थवाल, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन
श्री नरेन्द्र प्रसाद कैथोला, संकुल समन्वयक - नीलकंठ
श्रीमती लक्ष्मी पोखरियाल, प्रधानाध्यापक – रा आ प्रा वि गंगा भोगपुर

सम्पादकीय समिति

डॉ अतुल बमराड़ा, अकादमिक सम्पादक
रेखा पुरोहित, मुख्य सम्पादक
आशा बिष्ट, सम्पादक
धनेश्वरी रतूड़ी व पूनम बमराड़ा, सह-सम्पादक

आप अपनी समस्त रचनाएँ (छात्रों व अध्यापकों द्वारा स्वनिर्मित) WhatsApp के माध्यम से सम्पर्क सूत्र 7500941108 पर प्रेषित कर सकते हैं। किसी भी अन्य जानकारी के लिए आप हमारे ई-मेल gmpsgbm@gmail.com पर सम्पर्क कर सकते हैं।



Contact

Government Model Primary School Ganga Bhogpur

PO Ganga Bhogpur Malla, Yamkeshwar

Pauri Garhwal – 249306

gmpsgbm@gmail.com (E) | www.gmpsgbm.wixsite.com/gmpsgb (W)